शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सोशल मीडिया का भारतीय युवा वर्ग पर प्रभाव

डॉ.सुलभा काकिर्डे
सीमा चौकसे (शोधार्थी)
समाजशास्त्र विभाग
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आज की युवा पीढ़ी में सोशल मीडिया बहुत ही तेजी से जिन्दगी का अभिन्न हिस्सा बन गया है। 2014 से 2019 में इसका उपयोग दोगुना हो गया है। सोशल मीडिया के व्यापक उपयोग ने युवा वर्ग को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूप से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने युवा वर्ग को स्वास्थ, जागरूकता, कैरियर निर्माण में सहायक, नये रिश्तों को बनाने में सहायता, आनलाइन शापिंग शिक्षा, मनोरंजन, आनलाईन बैंकिंग में सहायता की। वहीं युवा वर्ग में अवसाद चिंता, एकाग्रता में कमी, मोटापा, साइबर क्राइम जैसी समस्याएं भी दी हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्य हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से तथ्यों का संकलन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव क्या हैं और सोशल मीडिया के संतुलित और नियोजित उपयोग के महत्व का पता लगाना।

परिचय

सूचना क्रांति के युग में सोशल मीडिया बहुत ही तेजी से युवा वर्ग की जिन्दगी का अभिन्न हिस्सा बन गया है। फेसबुक, इन्स्टाग्राम, व्हाटसअप, ट्विटर, स्नैपचेट, यूट्युब, के बिना व्यक्ति असहजता महसूस करता है। उसे हर पल यह लगता है कि कहीं कुछ छूट रहा है। आज का युवा रिंगजायटी, सेल्फाटिस जैसी बिमारी से पीड़ित हो रहा है। स्टेटिटका डाट काम में 6 मई 2020 को जारी रिपोर्ट के अनुसार विश्व की 2/3 आबादी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सोशल मीडिया से जुड़ी है। सोशल मीडिया एप्लीकेशन की सूची है। जैसे व्हाट्सअप, लिंक्डइन, यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर इत्यादि इन बेबसाइटस के माध्यम से लोग जानकारी एवं अपनी जीन्दगी के महत्वपूर्ण क्षण, घटनाओं उपलब्धियों को साझा (शेयर) करते है।

उद्देश्य

1 सोशल नेटवर्किंग साइट के प्रति युवा वर्ग की मनोवृत्ति / झुकाव का अध्ययन ।

2 सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग का भारतीय युवा वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन।

3 सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग का भारतीय युवा वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन।

4 सोशल मीडिया के संतुलित नियंत्रित एवं नियोजित उपयोग के महत्व का पता लगाना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य विश्लेषण पद्धति का सहयोग लिया गया। शोध कार्य हेतु तथ्यों का संकलन वाचनालय विधि, अवलोकन विधि, प्रश्नावली के माध्यम से किया गया।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अध्ययन क्षेत्र

शोधकार्य हेतु सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले युवा वर्ग विशेषकर महाविद्यालय में अध्ययनरत 140 छात्र-छात्राओं से प्रश्नावली के माध्यम से तथ्यों को संकलन किया गया।

तथ्य संकलन के स्रोत

प्राथमिक स्रोत : महाविद्यालय जाने वाले एवं सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले 140 युवाओं से प्रश्नावली विधि का उपयोग कर प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया।

द्वितीयक स्रोत : समाचार पत्र में विषय पर प्रकाशित किये गये लेख, विषय किये गए पूर्व अध्ययन, बेबसाइट, सोशल मीडिया के उपयोग पर किए गए सर्वे एवं संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

साहित्य पुनरावलोकन

जोशी प्राची (2017) के अनुसार युवा वर्ग में 72 प्रतिशत युवा अपने परिवार व दोस्तों से सम्पर्क के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे है। युवा वर्ग स्वयं यह स्वीकार रहा है। कि सोशल मीडिया ने उनके जीवन को अनेक तरीकों से प्रभावित किया है। निष्कर्ष में बताया है कि परिवार विकास क्षेत्र में सामुदायिक स्तर पर सोशल नेटवर्किंग के उपयोग पर निरीक्षण का कार्य होना चाहिए। महाविद्यालय में सप्ताह में एक व्याख्यान सोशल मीडिया के अच्छे एवं बुरे पहलूओं को बताने के लिए होना चाहिए।

ब्राउन जेसिका (2018) 0 से 2 सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग करने वाले लोगो की तुलना में सात में अधिक सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग करने वाले लोगो में चिंता ध्यान केन्द्रित करने की समस्या, सोने के समय में कमी आदि लक्षणों की आशंका तीन गुना अधिक थी।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

विज्ञान के साधनों का सही अथवा गलत उपयोग करने की पूरी जिम्मेदारी व्यक्ति के विवेक पर निर्भर है। सोशल मीडिया ने चीजों को देखने के तरीकों को बदल दिया है। विशेषकर युवाओं के सपनों को पूरा करने में सोशल मीडिया की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू निम्नलिखित हैं :

शिक्षा

सोशल मीडिया ने शिक्षा में नवाचारी परिवर्तन किया। इंटरनेट के माध्यम से संचालित गूगल, यूट्यूब, आदि प्लेटफोर्म ने छात्रों और शिक्षकों के लिए ज्ञान के द्वार खोल दिए हैं। उन्हें अब दुनिया से अपने ज्ञान को हासिल और पुष्ट करने का साधन उपलब्ध हो गया है। प्रोजेक्ट बनाने में, अपनी विषयगत समस्याओं को सुलझाने में, समय के अभाव या अन्य समस्या के कारण वचिंत छात्रों को कभी भी कहीं भी अपनी सुविधा के समय शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा रहती है। शिक्षकों को भी अपने ज्ञान को परिमार्जित परिवर्धित करने में सोशल मीडिया सहायक है।

राजनीति

सोशल मीडिया ने राजनीति के क्षेत्र में जागरूकता बढायी है। देश में मतदान के प्रतिशत को बढ़ाने मे भी सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फेसबुक, इन्स्टाग्राम, ट्विटर पर जब युवा साथियों की राजनीतिक पोस्ट पढ़ते हैं, तब उनमें जागरूकता के साथ विषय पर अपनी राय बनाने में मदद मिलती है। जिसे वह सोशल मीडिया के मंच पर अभिव्यक्त भी करते हैं। आनॅलाइन साइट बहुत ही तेजी से किसी विषय को सामाजिक आंदोलन में बदल देती है। जैसे कोविड-19 के समय थाली बजाना, दिये जलाना।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आर्थिक क्षेत्र में

सोशल नेटवर्किंग साइट्स व्यवसाय में वृध्दि के लिए वरदान साबित हुई है। इन साइट्स ने रोजगार के हजारों रास्ते खोल दिये हैं। नौकरी डाट काम, काम, जाब ट्रूडे, इनडीड डाटकाम जैसी साइट्स निजी एवं सरकारी नौकरी ढूँढने में मददगार है। स्वरोजगार के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया से हजारों आइडिया, बाजार की जानकारी, उत्पाद के विज्ञापन आदि मे अभूतपूर्व मदद मिली है। सोशल मीडिया आज नियोक्ता एवं कर्मचारी के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी है। लिंक्डइन के माध्यम से 89 प्रतिशत युवाओं की भर्ती की गई। इसके अतिरिक्त 26 प्रतिशत फेसबुक के माध्यम से और 15 प्रतिशत ट्विटर के माध्यम से भर्ती हुई।

जागरूकता

आज का युवा अधिकांश जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त करता है। यह प्रमुखता से देखने में आया है कि सूचना किसी अन्य माध्यम की तुलना में सोशल मीडिया पर अधिक तेजी से फैलती है। इसने संवेदनशीलता को भी बढ़ाया है।

सामाजिक लाभ

अध्ययन में यह पता चला कि 68 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सोशल नेटवर्किंग साइट ने उनकी कठिनाई के समय मदद की है। सोशल मीडिया ने 57 प्रतिशत युवाओं को नये मित्र बनाने में सहायता की है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलू

सोशल मीडिया के अनेक नकारात्मक पहलू भी हैं। इसका परिवार, समाज और देश के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण पर अनुचित प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

लत : बहुउपयोगी होने के कारण व्यक्ति सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग कर रहा है, जिससे आज यह धूम्रपान एवं मद्यपान की तरह लत का रूप लेता जा रहा है। डारिया क्रूस व मार्क ग्रिफिथ ने इस सम्बन्ध में पिछले 43 अध्ययन का विश्लेषण किया एवं निष्कर्ष में पाया कि सोशल मीडिया की लत एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या है, जिसके लिए चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता है।

शारीरिक स्वास्थ्यगत समस्या : सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से कई शारीरिक मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। जैसे लत, भ्रम, चयापचय असंतुलन, मोटापा, मायोपिया, नींद की कमी, प्राकृतिक दिन की कम मात्रा, विटामिन डी की कमी आदि शारीरिक समस्याएं आम हो चली हैं।

मानसिक स्वास्थगत समस्याएं : सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से सर्वाधिक मानसिक स्वास्थ्यगत समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जैसे भ्रम, (रिंग्जायटी जिससे भ्रम होता है कि कोई कॉल आया), सेल्फीटाइज, एकाग्रता में कमी, संवेदना में कमी व्यवहारगत समस्याएं इत्यादि। कई बच्चे एवं युवा आमने-सामने के संबंधों से अधिक आनलाइन समय बिताने से अवसाद का सामना कर रहे है। 20 प्रतिशत युवा अपने परिजनों की अपेक्षा सोशल मीडिया से जानकारी जुटाते हैं, जो कई बार गलत एवं फर्जी होती है।

अफवाह : दूसरे माध्यमों की तुलना में सोशल मीडिया से अधिक तेजी से अफवाह प्रसारित होती है। मॉब लिचिंग की प्रमुख वजह सोशल मीडिया पर अफवाह का प्रसार होना है।

साइबर क्राइम : सोशल मीडिया ने साइबर क्राइम को बढ़ावा दिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से पहचान की चोरी, हेकिंग, कापीराइट का उल्लंघन,

सूचना की चोरी, आनलाइन धोखाधड़ी जैसी अनेक प्रकार की वित्तीय हानियों के मामलों में वृद्धि हुई है।

निराशा / आक्रामकता : सोशल मीडिया दूसरों के साथ तुलना करने को उकसाता है। यही तुलना ईर्ष्या को जन्म देती है और यही ईर्ष्या निराशा या व्यवहार में आक्रामकता की वजह बनती है। तुलना का असर सेल्फ एस्टीम पर भी पड़ता है। सेल्फ एस्टीम यानि मेरी नजर में मेरी स्वयं की इज्जत है। जब सेल्फ एस्टीम चोटिल होता है तो अवसाद बढ़ता है।

निष्कर्ष

अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि सोशल मीडिया से प्रत्येक क्षेत्र में असंख्य लाभ प्राप्त हो रहे हैं, वहीं सोशल मीडिया के अनियंत्रित, आवश्यकता से अधिक उपयोग से कई शारीरिक, मानसिक समस्याएं भी बढ़ रही हैं। जीवन में अनुशासन और संयम के तत्व को अनिवार्य रूप से दाखिल कर इससे निजात पायी जा सकती है। शासन स्तर पर भी समाज के सहयोग से सोशल नेटवर्किंग को नियंत्रित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- *रावत सुषमा, डॉ. सतीश कुमार, व्यंकटेश कुमार, जनरल आफ मैंनेजमेंट, 01/02/2019*
- *ब्राऊन जेसिका बी.बी., सी फ्यूचर में दिनांक 04/01/2018 को प्रकाशित लेख*
- *स्टेटिका कॉम में 6 मई 2020 को जारी रिपोर्ट*
- *जोशी प्राची के शोध पत्र ए स्टडी आन इम्पेक्ट आफॅ सोशल नेटवर्किंग साइट ऑन यूथ*
- *दिनांक 17 दिसम्बर 2017 इंडियन रिसर्च जनरल ऑफ़ इंडियन लैंग्वेज।*